

## सीता माता की आरती

आरती श्री जनक दुलारी की ।  
सीता जी रघुवर प्यारी की ॥

जगत जननी जग की विस्तारिणी,  
नित्य सत्य साकेत विहारिणी,  
परम दयामयी दिनोधारिणी,  
सीता मैया भक्तन हितकारी की ॥

आरती श्री जनक दुलारी की ।  
सीता जी रघुवर प्यारी की ॥

सती श्रोमणि पति हित कारिणी,  
पति सेवा वित्त वन वन चारिणी,  
पति हित पति वियोग स्वीकारिणी,  
त्याग धर्म मूर्ति धरी की ॥

आरती श्री जनक दुलारी की ।  
सीता जी रघुवर प्यारी की ॥

विमल कीर्ति सब लोकन छाई,  
नाम लेत पवन मति आई,  
सुमीरात काटत कष्ट दुख दाई,  
शरणागत जन भय हरी की ॥

आरती श्री जनक दुलारी की ।  
सीता जी रघुवर प्यारी की ॥

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/22015/title/sita-mata-ki-aarati>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |